युवा जीवन

अगस्त 2026

जीवन के हर दौर में, यीशु हमारे साथ बने रहते हैं —

हमारे अच्छे मित्र।

प्रस्तावना

प्रिय युवा मित्रों, यीशु के अनमोल नाम में आपका अभिवादन!

जागृति के इन दिनों में, युवाओं के तौर पर आपकी भूमिका पहले से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है। जब आप परमेश्वर की सेना के रूप में उठेंगे, तो हमारे देश में काम कर रही दुश्मन की ताकत टूट जाएगी। परमेश्वर आपको छोटे-छोटे समूहों में इकट्ठा होकर प्रार्थना करने, सुसमाचार का प्रचार करने, आध्यात्मिक रूप से बंधे लोगों को आज़ादी दिलाने और अपने वचन की जीवन देने वाली सामर्थ के ज़रिए निराश युवाओं में नई जान फूंकने के लिए बुला रहे हैं।

भले ही आप किसी बड़े समूह का हिस्सा बनकर सेवा न कर पाएं, फिर भी आप सिर्फ़ एक मित्र के साथ मिलकर परमेश्वर के राज्य के लिए बदलाव ला सकते हैं। बाइबल कहती है, "एक व्यक्ति एक हजार को खदेड़ सकता है, और दो मिलकर दस हजार को पीछे हटने पर मजबूर कर सकते हैं।"

युवा मित्र, आप और आपका सबसे करीबी मित्र परमेश्वर के लिए मिलकर क्या कर रहे हैं?

शुरुआती कलीसिया के दिनों में, पौलुस और सिलास ने सेवाकार्य में वफादार साथियों के तौर पर प्रभु की ज़बरदस्त सेवा की। उनकी मित्रता में तीन खास गुण थे:

अटूट विश्वास

प्रेरितों के काम 16 में, फिलिप्पी शहर में सेवा करते समय, पौलुस और सिलास को पीटा गया, जेल की भीतरी कोठरी में डाल दिया गया और बेड़ियों में जकड़ दिया गया। फिर भी, आधी रात को शिकायत करने के बजाय, उन्होंने प्रार्थना की और परमेश्वर की स्तुति के गीत गाए। दुख के बीच भी, उन्होंने प्रभु के प्रति अटूट विश्वास और स्थिर प्रेम दिखाया।

मन की एकता

दर्द, अपमान और मुश्किलों को सहने के बावजूद, सिलास ने जो कुछ हुआ उसके लिए कभी पौलुस को दोष नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने खुशी-खुशी सेवाकार्य की कीमत चुकाई, पौलुस के साथ एकजुट होकर खड़े रहे और एक मन और एक आत्मा से प्रार्थना की और परमेश्वर की महिमा की।

आत्माओं के लिए बोझ

उनकी प्रार्थनाएं निजी आराम पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के मिशन पर केंद्रित थीं। उनके हृदयों से यह पुकार निकलती थी, "हे प्रभु, हमें छुड़ा ताकि हम और भी बहुत से लोगों को तेरे प्रेम के बारे में बता सकें।" आत्माओं के लिए इसी बोझ ने उन्हें लगातार प्रार्थना और स्तुति करते रहने के लिए प्रेरित किया। नतीजतन, फिलिप्पी के दारोगा और उसके पूरे परिवार ने मसीह पर विश्वास किया, बपतिस्मा लिया और उद्धार पाया।

परमेश्वर के दो समर्पित सेवकों के बीच की ईश्वरीय दोस्ती वह ज़रिया बनी जिससे कई लोगों के जीवन बदल गए।

अब स्वयं से पूछें:

आज आपकी ज़िंदगी को किस तरह की मित्रता आकार दे रही है? क्या आपकी मित्रता सिर्फ़ मज़े और आनंद के लिए है, या वे परमेश्वर का राज्य बनाने और लोगों के जीवन पर हमेशा के लिए असर डालने में मदद कर रही हैं?

क्यों न पौलुस और सीलास की तरह आगे बढ़ें और एक ऐसी पीढ़ी बनें जो मिलकर परमेश्वर की सेवा करे?

मसीह मिशन में
मोहन सी. लाजरस

बाइबल की खोज-बीन

अय्यूब

अय्यूब की पुस्तक ज़िंदगी के सबसे गहरे सवालों में से एक का जवाब देती है: "धर्मी लोगों को दुख क्यों सहना पड़ता है?"

इसका मुख्य संदेश यह है कि परमेश्वर की बुद्धि और उनके मकसद इंसानी समझ से कहीं परे हैं। भले ही हम उनके तरीकों को न समझ पाएं, फिर भी हम उनकी बेहतरीन योजना पर भरोसा कर सकते हैं।

मुख्य पात्र

- अय्यूब
- अय्यूब के मित्र – एलीपज़, बिल्दद और ज़ोफ़र
- एलीहू – एक नौजवान जो परमेश्वर के न्याय के बारे में बात करता है

मुख्य घटनाएँ

- शैतान अय्यूब के विश्वास की परीक्षा लेता है।
- अय्यूब अपने बच्चों, अपनी संपत्ति और अपने स्वास्थ्य को खो देता है।
- अय्यूब के मित्र उस पर गलत आरोप लगाते हैं और ज़ोर देकर कहते हैं कि उसका दुख ज़रूर उसके किसी निजी पाप का नतीजा है।
- परमेश्वर बवंडर में से अय्यूब से बात करते हैं।
- अय्यूब नम्रता से मानता है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है जो सब कुछ कर सकता है, और वह पूरी तरह से उस पर भरोसा करता है।
- परमेश्वर अय्यूब की खुशहाली लौटाते हैं और उसे पहले से दोगुनी आशीष देते हैं।

मुख्य सीख

भले ही ज़िंदगी हमें ऐसे रास्तों पर ले जाए जिन्हें हम समझ न सकें, जो लोग पूरे मन से परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे आखिर में उसकी भलाई, वफ़ादारी और भरपूर आशीषों का अनुभव करते हैं।

भजन संहिता

भजन संहिता की पुस्तक बाइबल में गीतों, प्रार्थनाओं और उपासना का संग्रह है। इसमें 150 भजन हैं, जिनमें स्तुति-गीत, प्रार्थनाएँ, धन्यवाद, विलाप-गीत, ज्ञान के गीत और राजाओं से जुड़े भजन शामिल हैं।

लेखक	कुल भजन	भजन
दाऊद	73 (खास तौर पर बताये गए)	भजन 3-9, 11-32, 34-41, 51-65, 68-70, 86, 101, 103, 108-110, 122, 124, 131, 133, 138-145
आसाप	12	भजन 50, 73-83
कोरह के बेटे	11	भजन 42-49, 84, 85, 87, 88
सुलेमान	2	भजन 72, 127
मूसा	1	भजन 90
एज्राहवंशी हेमान	1	भजन 88
एज्राहवंशी एतान	1	भजन 89
अज्ञात लेखक	लगभग 50	भजन 1, 2, 10, 33, 43, 66, 67, 71, 91-100, 102, 104-107, 111-121, 123, 125-130, 132, 134-137, 146-150

नीतिवचन लेखक

सुलैमान – नीतिवचन 1–29	आगूर – नीतिवचन 30	राजा लेमुएल – नीतिवचन 31

मुख्य विषय

• बुद्धिमानी और मूर्खता • परमेश्वर का भय और परमेश्वरीय चरित्र • धार्मिकता और न्याय • पारिवारिक रिश्ते • बच्चों की परवरिश और पालन-पोषण • आत्म-नियंत्रण • समझदारी भरी बातें बनाम मूर्खतापूर्ण बातें • धन और गरीबी • मेहनत और आलस • अच्छे मित्र चुनना • जीवन के हर पहलू को आकार देने वाले गुण • धन का सही प्रबंधन • एक गुणी स्त्री के गुण

भारत में जन्म लेने के अद्भुत सौभाग्य के लिए मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ! मुझे भारतीय होने पर गर्व है! स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता का मैं आभारी हूँ कि उन्होंने मेरे जन्म के स्थान के रूप में इस देश को चुना।

मेरा विश्वास है कि जिस परमेश्वर ने इस संपूर्ण संसार की रचना की है और जो इससे प्रेम करते हैं, उनका भारत के प्रति भी एक विशेष स्नेह है। आज, अमेरिका जैसे देशों की दुनिया भर में प्रशंसा की जाती है, फिर भी बाइबिल में उनके नाम नहीं मिलते। लेकिन मुझे यह जानकर खुशी और गर्व होता है कि परमेश्वर के वचन (एस्तेर 1:1 और 8:9) में भारत का नाम आता है।

हमारे राष्ट्र के विषय में भविष्यसूचक प्रतिज्ञा यह है:

"भारत विश्व के राष्ट्रों के मध्य एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त करेगा। यह हर प्रकार से धन्य होगा। यह भूमि प्रभु के ज्ञान से परिपूर्ण होगी।"

प्रभु ने यह प्रतिज्ञा कई वर्ष पहले किया प्रकट था, और हम लगातार इसके पूरा होने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

लेकिन अगर इस प्रतिज्ञा को हमारे देश में सच होना है, तो परमेश्वर की संतान के रूप में हमारी भी एक ज़िम्मेदारी है जिसे हमें पूरा करना है।

★अपने देश से प्रेम करें!★

जिस तरह हमारे प्रभु यीशु मसीह भारत से प्रेम करते हैं, उसी तरह हमें भी अपने देश से प्रेम करना चाहिए। प्रभु का इस देश के प्रति गहरा प्रेम है। वह पापियों के मित्र हैं। जिस तरह यीशु लोगों से प्रेम करते हैं, हमें भी अपने आस-पास के लोगों से प्रेम करना चाहिए।

नीनवे के लोगों ने पाप में जीकर परमेश्वर को दुखी किया था। फिर भी, धर्मी परमेश्वर उन्हें नष्ट नहीं करना चाहते थे। इसके बजाय, उनका हृदय चाहता था कि वे पश्चाताप करें और अपने पापों से मुड़ें। इसीलिए उन्होंने कहा,

"क्या मुझे नीनवे के उस बड़े शहर की चिंता नहीं करनी चाहिए, जिसमें एक

लाख बीस हज़ार से ज़्यादा लोग हैं जो अपने दाहिने और बाएं हाथ में अंतर नहीं कर सकते, और साथ ही बहुत से जानवर भी हैं?" (योना 4:11)। जिस तरह पाप में जी रहे लोगों के लिए परमेश्वर का हृदय करुणा से भरा था, उसी तरह हमारे हृदयों में भी लोगों के लिए बोझ होना चाहिए। हमें तमिलनाडु के 8 करोड़ लोगों और भारत के 146 करोड़ लोगों के प्रति करुणा रखनी चाहिए।

अपने देश के लिए प्रार्थना करें!

अगर हम सच में अपने देश से प्रेम करते हैं, तो हमें उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

सिर्फ यह कहना कि "मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ," काफी नहीं है। जो लोग सच में अपने देश के लिए प्रार्थना करते हैं, वही उससे सच्चा प्रेम करते हैं। बाइबल हमें सिखाती है: "मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि सभी लोगों के लिए—राजाओं और अधिकार वाले सभी लोगों के लिए—याचिकाएँ, प्रार्थनाएँ, मध्यस्थता और धन्यवाद किया जाए" (1 तीमुथियुस 2:1–4)।

हमें भारत के हर राज्य के लोगों, अपने राष्ट्रीय नेताओं और अधिकार के पदों पर बैठे सभी लोगों के लिए पूरे हृदय से प्रार्थना करनी चाहिए। जैसे-जैसे हम प्रार्थना करते रहेंगे, प्रभु हमारे देश पर आशीष बनाए रखेंगे।

देश के साथ 'सुसमाचार' साझा करें!

बाइबल हमें सिखाती है, "जिसका जो हक़ है, उसे वह दो" (रोमियों 13:7)।

एक देश अपने नागरिकों द्वारा दिए गए टैक्स से चलता है। इसलिए, हमें सरकार को देय टैक्स ईमानदारी से चुकाना चाहिए। सरकार परमेश्वर द्वारा स्थापित एक संस्था है। बाइबल हमें बताती है कि जो लोग शासन करते हैं और अधिकार के पदों पर सेवा करते हैं, वे परमेश्वर के सेवक हैं (रोमियों 13:4, 6)।

चाहे वह प्रॉपर्टी टैक्स हो, ज़मीन का टैक्स हो, इनकम टैक्स हो या कोई अन्य कानूनी ज़िम्मेदारी, हमें ईमानदारी से अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करनी चाहिए। हमें न केवल अच्छे ईसाई बनने के लिए, बल्कि ज़िम्मेदार नागरिक बनने के लिए भी बुलाया गया है।

जब हम ईमानदारी से अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं, तो प्रभु निश्चित रूप से हमें आशीष देंगे।

देश के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करें!

यीशु मसीह का प्रचार करने का मतलब लोगों का धर्म बदलना नहीं है।

यीशु ने कभी नहीं कहा, "कोई धर्म फैलाओ।"

इसके बजाय, उन्होंने हमें आज्ञा दी, "सारी दुनिया में जाओ और हर प्राणी को सुसमाचार सुनाओ।" (मरकुस 16:15)

जब कोई व्यक्ति यीशु को अपने हृदय में अपनाता है, तो उसका जीवन बदल जाता है। जब पूरा परिवार यीशु को अपनाता है, तो वह परिवार बदल जाता है।

जब कोई समुदाय यीशु को अपनाता है, तो वह समुदाय बदल जाता है। पाप माफ़ हो जाते हैं। श्राप टूट जाते हैं। आशीषें बरसने लगती हैं।जैसे-जैसे जीवन बदलते हैं, देश भी बदल जाता है। इसीलिए यीशु मसीह के सुसमाचार को सभी के साथ साझा करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

प्रिय युवाओं,

आइए हम अपने देश, भारत से प्रेम करें!

आइए हम अपने देश, भारत के लिए प्रार्थना करें!

आइए हम अपने देश के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को ईमानदारी से पूरा करें!

आइए हम पूरे देश में यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें! तब प्रभु निश्चित रूप से हमारे देश को शांति, समृद्धि और भलाई प्रदान करेंगे, और भारत के विषय में उन्होंने जो भी भविष्यवाणी की है, वह निश्चित रूप से पूरी होगी...!

माता-पिता का दबाव

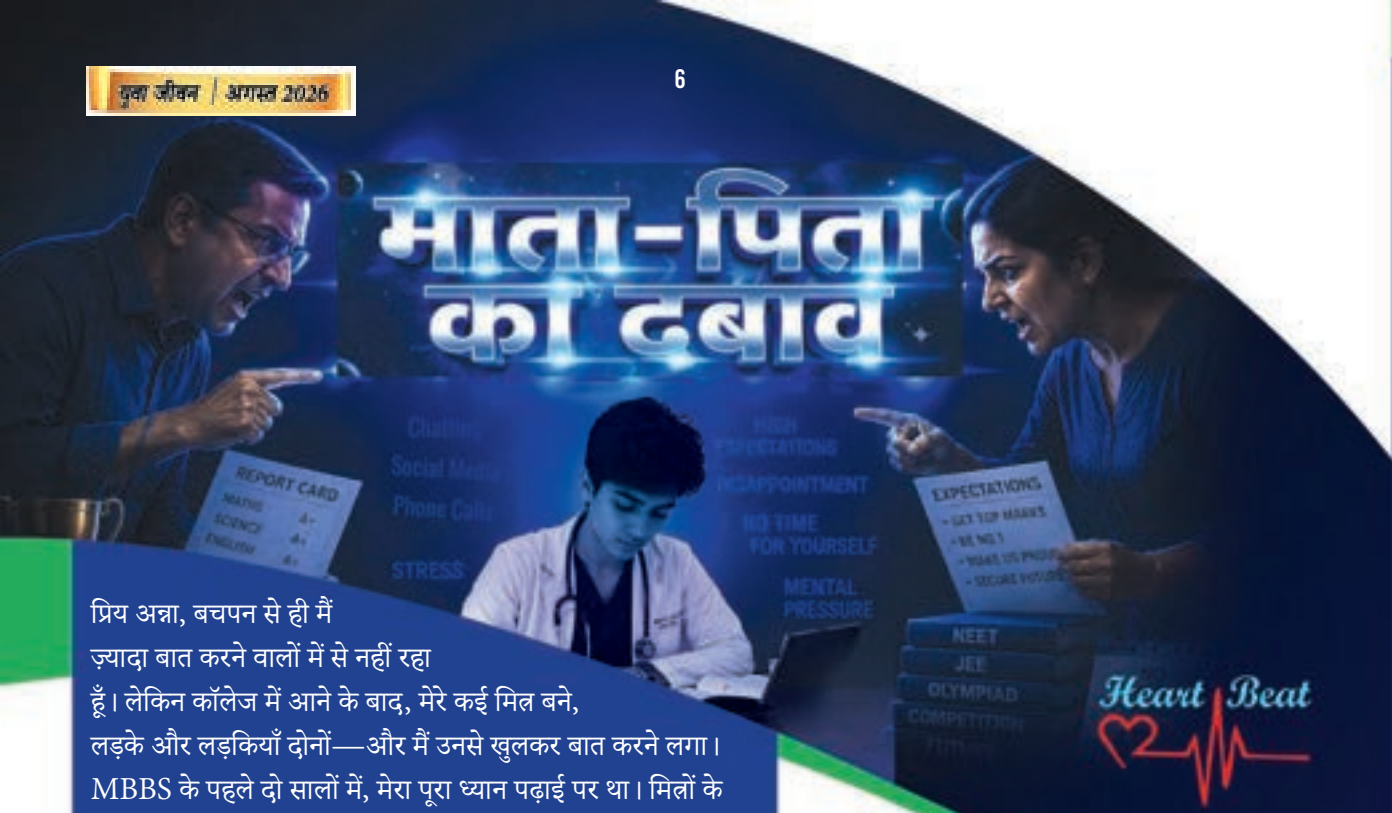

Heart Beat

प्रिय अन्ना, बचपन से ही मैं ज़्यादा बात करने वालों में से नहीं रहा हूँ। लेकिन कॉलेज में आने के बाद, मेरे कई मित्र बने, लड़के और लड़कियाँ दोनों—और मैं उनसे खुलकर बात करने लगा। MBBS के पहले दो सालों में, मेरा पूरा ध्यान पढ़ाई पर था। मित्रों के साथ बिताने के लिए मेरे पास बहुत कम समय होता था। अब जब मैं तीसरे साल में आ गया हूँ, तो मेरे पास थोड़ा ज़्यादा खाली समय है, इसलिए मैं अपने मित्रों से ज़्यादा बात करता हूँ। हमारी ज़्यादातर बातचीत पढ़ाई-लिखाई के बारे में होती है। हालाँकि, चूँकि मुझे लड़के और लड़कियाँ दोनों मित्रों के फ़ोन आते हैं, इसलिए मेरे माता-पिता मुझ पर बहुत शक करने लगे हैं। वे अक्सर ऐसी बातें कहते हैं: "जैसे ही तुम तीसरे साल में आए, तुम्हारा ध्यान भटक गया है। तुम अपना समय बर्बाद कर रहे हो। तुम हमेशा सोशल मीडिया पर चैटिंग और समय बिताते रहते हो। अगर तुम ऐसे ही करते रहे, तो ज़िंदगी में कभी कुछ हासिल नहीं कर पाओगे या कामयाब नहीं हो पाओगे।" उनकी बातों ने मुझे इतना दुखी किया है कि मेरा आत्मविश्वास पूरी तरह खत्म हो गया है। मैंने कभी किसी से गलत तरीके से बात नहीं की है। मैं सच में सभी को सिर्फ़ मित्र मानता हूँ। जब मेरे अपने माता-पिता ही मुझ पर भरोसा नहीं करते, तो मेरा हृदय टूट जाता है।

क्या लड़कियों से बात करना गलत है? क्या लड़की से होने वाली हर बातचीत का मतलब प्रेम ही होता है?

मैं अभी भी पूरी तरह अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे रहा हूँ। अगर मेरे माता-पिता की सोच गलत है, तो मैं क्या कर सकता हूँ? और 21वीं सदी में भी कुछ माता-पिता इतने पुराने ख्यालों वाले क्यों होते हैं? मैं सच में बहुत परेशान हूँ... मैं आगे नहीं बढ़ पा रहा हूँ। कृपया मेरी मदद करें!

— रुबन,
चेन्नई

प्रिय रुबन, बस शांत हो जाओ!

हो सकता है कि तुम्हारे माता-पिता की बातों ने तुम्हारे आत्मविश्वास को चोट पहुँचाई हो और तुम्हारी पढ़ाई की रफ़्तार पर भी असर डाला हो। लेकिन चिंता मत करो—मैं तुम्हारा दर्द समझता हूँ। तुम एक महत्वाकांक्षी युवा हो। इतनी आसानी से हिम्मत मत हारो। तुम अपना सपना पूरा कर सकते हो। इस बात पर सोचने के बजाय कि "मेरे माता-पिता ने सिर्फ़ एक फ़ोन कॉल की वजह से मुझे गलत समझा," स्वयं से यह पूछो: "मैं उन्हें मुझे बेहतर ढंग से समझने और उनकी गलतफहमी दूर करने में कैसे मदद कर सकता हूँ?" आपके माता-पिता जिस दौर में बड़े हुए, वह उस दौर से बहुत अलग है जिसमें आप बड़े हो रहे हैं। कभी-कभी उनके लिए 'Gen Z' की दुनिया को समझना मुश्किल होता है। कई माता-पिता जानते हैं कि अपने बच्चों पर दबाव कैसे डालना है, लेकिन वे हमेशा यह नहीं जानते कि अपने डर और प्रेम को सही तरीके से कैसे ज़ाहिर करें।

रुबन, आपके माता-पिता के हर कड़े शब्द के पीछे एक बात पक्की होती है—आपके लिए उनका प्रेम, जिसमें थोड़ा डर भी मिला होता है। उनका हृदय कहता है, "हमारा बेटा रास्ते से न भटक जाए। उसे ज़िंदगी में कामयाब होना चाहिए। उसे गिरना नहीं चाहिए या अपना भविष्य बर्बाद नहीं करना चाहिए।" कई बार, वही डर गुस्से के रूप में बाहर आता है।

जैसे प्रेशर कुकर में दबाव बढ़ने पर तेज़ आवाज़ आती है, वैसे ही कुछ माता-पिता भावुक होकर कड़े शब्द बोल देते हैं। लेकिन अगर आप सही समय पर शांति से जवाब दें, तो वह गुस्सा अक्सर अपने आप शांत हो जाता है।

आपके लिए कुछ सुझाव

- शुरुआती दो सालों में, आपने शायद ही कभी फ़ोन का इस्तेमाल किया हो। अचानक अब उस पर ज़्यादा समय बिताने से स्वाभाविक रूप से उन्हें शक हो सकता है।
- एक दिन, शांति से अपना फ़ोन अपने माता-पिता को दें और कहें: "पापा... मैं वादा करता हूँ कि मैं डॉ. रुबन बनूँगा और आपको मुझ पर गर्व होगा। जब आपको मुझ पर फिर से पूरा भरोसा हो जाए, तो प्लीज़ यह फ़ोन मुझे वापस दे देना।"
- बस उन कुछ सच्चे शब्दों से ही उनका हृदय बदलना शुरू हो सकता है।
- दुनिया में ऐसे माता-पिता मिलना मुश्किल है जो अपने बच्चों से उतना ही गहरा प्रेम करते हों जितना भारतीय माता-पिता करते हैं। उनके त्याग और प्रेम का कोई हिसाब नहीं है।
- आखिरकार, वे बस एक ही चीज़ चाहते हैं: "हमारा बच्चा ज़िंदगी में आगे बढ़े। हमारा बच्चा कभी फेल न हो या अपना भविष्य बर्बाद न करे।"
- कुछ माता-पिता उस प्रेम को प्रेम से ज़ाहिर करना जानते हैं। दूसरे लोग उसे सिर्फ़ गुस्से के ज़रिए ज़ाहिर करना जानते हैं। इसीलिए परिवारों में अक्सर बेवजह दूरियाँ और गलतफहमियाँ पैदा हो जाती हैं।

एक और ज़रूरी बात...

आप तीसरे साल तक सफलतापूर्वक इसलिए पहुँच पाए हैं क्योंकि आपने अपने शुरुआती दो साल पूरी तरह से अपनी पढ़ाई पर ध्यान दिया। अब, आपकी पढ़ाई का दबाव शायद थोड़ा कम हो गया हो। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप अपना खाली समय बिना किसी सीमा के बिताएँ।

क्या लड़कियों से बात करना गलत है?

नहीं। किसी लड़की से बात करने में कुछ भी गलत नहीं है। अच्छी दोस्ती रखने में भी कुछ गलत नहीं है। लेकिन एक ज़रूरी बात कभी न भूलें। मित्रता और प्रेम के बीच बहुत बारीक फ़र्क होता है। कई लोग बिना जाने ही उस दायरे को पार कर जाते हैं। इसलिए जब भी आप विपरीत लिंग के मित्रों से बात करें, तो हमेशा एक सही दायरा बनाए रखें। भले ही आप कुछ गलत न कर रहे हों, फिर भी अपने व्यवहार, समय के सही इस्तेमाल और अपनी प्राथमिकताओं से अपने माता-पिता का भरोसा जीतें।

आखिर में, रुबन...

माता-पिता को बदलना हमेशा हमारे बस में नहीं होता। लेकिन अपना नज़रिया बदलना हमारे हाथ में है। कई बार, यही चीज़ टूटे हुए रिश्तों को ठीक करती है और परिवार में शांति वापस लाती है। डॉक्टर बनने का आपका सपना पूरा करने में परमेश्वर ज़रूर आपकी मदद करेंगे। इससे भी बढ़कर, वे आपको पवित्र रखेंगे, समझदारी और हिम्मत देंगे, और आपकी पढ़ाई में और बेहतर करने में मदद करेंगे। अपना ध्यान बनाए रखें। विनम्र रहें। प्रार्थना करते रहें।

बहुत-बहुत शुभकामनाएँ, डॉ. रुबन!

हमारे अच्छे मित्र।

हमारे जीवन में हर रिश्ता या तो जन्म से मिलता है या हालात की वजह से। लेकिन मित्र एक अनोखा रिश्ता है—इसे हम स्वयं चुनते हैं। फिर भी, जिन्हें हम अपना सबसे करीबी मित्र मानते हैं, वे कभी-कभी हमें निराश कर सकते हैं या बदलते हालात की वजह से हमसे दूर हो सकते हैं। लेकिन एक ऐसा मित्र है जो हमें कभी नहीं छोड़ता, कभी नहीं बदलता और जीवन के हर मोड़ पर हमारे साथ रहता है— यीशु।

हम कैसे इंसान बनते हैं, इस पर मित्रों का बहुत बड़ा असर होता है। वे हमें बेहतर बना सकते हैं या गलत रास्ते पर ले जा सकते हैं। अच्छे परिवार में पैदा हुआ इंसान भी गलत मित्रों की संगत में पड़कर अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर सकता है। दूसरी ओर, बहुत मुश्किल हालात में पला-बढ़ा इंसान भी अच्छे और नेक मित्रों के असर से एक सार्थक और सफल जीवन बना सकता है।

यीशु की एक कहानी में छोटे बेटे के पिता बहुत प्रेम करने वाले और नेक इंसान थे, जो अपने नौकरों के साथ भी परिवार जैसा बर्ताव करते थे। फिर भी, गलत मित्रों के प्रभाव में आकर उसने गलत रास्ता चुना, बेपरवाह ज़िंदगी जी और भटक गया।

बाइबल हमें चेतावनी देती है: "धोखा न खाओ: बुरी संगती अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।" (1 कुरिन्थियों 15:33)

अच्छे परिवार से होने के बावजूद, गलत मित्रों ने उसे पाप की ओर खींच लिया। इसलिए हमें बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम किसे मित्र बनाते हैं और किसकी सलाह मानते हैं। गलत मित्रता धीरे-धीरे हमारी ज़िंदगी बर्बाद कर सकती है।

जब मूसा इस्राएलियों को 'प्रतिज्ञात देश' की ओर ले जा रहे थे, तो उन्होंने कनान का हाल जानने के लिए बारह जासूस भेजे। उनमें यहोशु और कालेब भी शामिल थे। इन दोनों ने पूरे हृदय से परमेश्वर पर भरोसा किया और एक-दूसरे का वफादार साथी बनकर साथ दिया। अच्छे मित्र हमें परमेश्वर के करीब लाते हैं। वे हमें परमेश्वर से दूर नहीं ले जाते और न ही हमें गलत समझौते करने के लिए उकसाते हैं। इसके बजाय, वे हमारे विश्वास को मज़बूत करते हैं और जीवन के हर मोड़ पर हमारे साथ खड़े रहते हैं। जब यहोशु और कालेब को भारी विरोध का सामना करना पड़ा, तब भी वे अपने विश्वास पर अडिग रहे। उन्होंने कभी परमेश्वर या एक-दूसरे का साथ नहीं छोड़ा।

बाइबल कहती है: "मित्र हर समय प्रेम करता है" (नीतिवचन 17:17)।

मूसा की मौत के बाद, इस्राएल के लोगों की अगुवाई करने के लिए यहोशु को चुना गया। कालेब भी उस भूमिका के लिए पूरी तरह काबिल था। फिर भी, उसे यहोशु से कभी जलन नहीं हुई। इसके बजाय, उन्होंने आखिर तक पूरे हृदयस से यहोशु की अगुवाई का समर्थन किया। जब आपका मित्र पढ़ाई, करियर या जीवन में आपसे आगे निकल जाता है, तो मित्रता की असली परीक्षा यह होती है कि क्या आप सच में उसकी कामयाबी का जश्न मना सकते हैं। सच्ची मित्रता वहीं बनती है जहाँ अहंकार के लिए कोई जगह नहीं होती।

अपने सपनों को पूरा करते समय, कालेब जैसे मित्र चुनें—ऐसे लोग जो आपसे कहें, "तुम यह कर सकते हो," न कि वे जो कहें, "तुम कभी सफल नहीं हो पाओगे।" इंसानी नज़रिए से यहोशु और कालेब मित्रता की बेहतरीन मिसाल हो सकते हैं। लेकिन एक ऐसा मित्र भी है जो उन दोनों से कहीं बढ़कर है—यीशु।

कभी-कभी आपके सबसे करीबी मित्र भी व्यस्त या उपलब्ध नहीं हो सकते हैं। लेकिन यीशु हमेशा उपलब्ध रहते हैं। हर हालात और हर पल में, वह ऐसे मित्र हैं जो कभी आपका साथ नहीं छोड़ते। इतना ही नहीं, जब हम भटक जाते हैं और पाप के रास्ते पर चलने लगते हैं, तो वह प्रेम से हमें सही राह दिखाते हैं और वापस सही रास्ते पर लाते हैं।

वह वायदा करते हैं: "मैं तुम्हें सिखाऊँगा और बताऊँगा कि तुम्हें किस रास्ते पर चलना चाहिए; मैं अपनी प्रेम भरी नज़र तुम पर रखकर तुम्हें सलाह दूँगा।" (भजन संहिता 32:8)

मेरे प्रिय युवा मित्रों, सच्चा मित्र वह नहीं है जो सिर्फ़ आपके खुशी के पलों में साथ हो। सच्चा मित्र वह है जो तब भी आपके साथ खड़ा रहे जब पूरी दुनिया आपके खिलाफ़ हो। सिर्फ़ यीशु ही ऐसे मित्र हो सकते हैं। कोई और नहीं। उन्होंने हमें यह शानदार वादा दिया है: "सचमुच, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, दुनिया के अंत तक।" (मत्ती 28:20)

इसलिए, अपने मित्र समझदारी से चुनें। लेकिन सबसे बढ़कर, यीशु के साथ एक करीबी और निजी रिश्ता बनाएँ—जो आपके सबसे बेहतरीन मित्र होंगे।

Revival IGNITERS

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दुसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार
Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दुसरे रविवार
THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार
Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

हेलो मित्रों! सब कैसे हैं? मुझे यकीन है कि शायद ही कोई ऐसा हो जिसने कभी हैरानी से तारों को न देखा हो या उनकी सुंदरता की तारीफ़ न की हो। है ना? 'विज्ञान और बाइबिल' के इस महीने के अंक में, हम तारों की दिलचस्प दुनिया के बारे में जानेंगे।

तो, क्या आप तैयार हैं? चलिए शुरू करते हैं!

1. तारे किससे बने होते हैं?

तारे मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैसों से बने होते हैं। उनके केंद्र (कोर) में 'न्यूक्लियर फ्यूजन' (नाभिकीय संलयन) नाम की एक प्रक्रिया होती है, जिससे बहुत ज़्यादा रोशनी और गर्मी निकलती है।

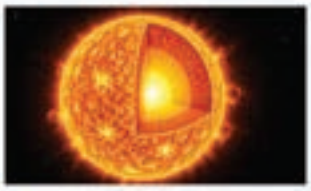

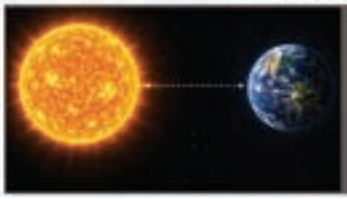

2. सूरज भी एक तारा है

हम रोज़ जो सूरज देखते हैं, वह एक आम G-टाइप पीला तारा है। यह पृथ्वी से लगभग 15 करोड़ (150 मिलियन) किलोमीटर दूर है।

3. हमारी गैलेक्सी में अरबों तारे हैं

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अकेले हमारी मिल्की वे गैलेक्सी में 100 अरब से ज़्यादा तारे हैं।

4. तारों का भी जीवन-चक्र होता है

इंसानों की तरह, तारे भी एक जीवन-चक्र से गुज़रते हैं। वे गैस और धूल के विशाल बादलों के बीच पैदा होते हैं, लाखों या अरबों सालों तक जीवित रहते हैं, और आखिर में फटकर या ढहकर खत्म हो जाते हैं।

5. तारे का रंग उसके तापमान को बताता है

- नीले तारे – बहुत ज़्यादा गर्म
- सफ़ेद तारे – बहुत गर्म
- पीले तारे – मध्यम तापमान (जैसे हमारा सूरज)
- लाल तारे – कम गर्म

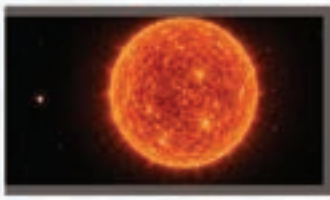

6. कुछ तारे बहुत विशाल होते हैं

कुछ 'सुपरजायंट' (बहुत बड़े) तारे हमारे सूरज से सैकड़ों या हज़ारों गुना बड़े होते हैं।

7. तारों की उम्र

कम द्रव्यमान वाले तारे अपना ईंधन बहुत धीरे-धीरे जलाते हैं और खरबों सालों तक जीवित रह सकते हैं। वहीं, विशाल तारे अपना ईंधन तेज़ी से खत्म करते हैं और शायद कुछ ही मिलियन (लाखों) सालों तक टिक पाते हैं।

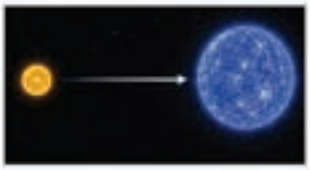

8. सुपरनोवा – एक ज़बरदस्त धमाका

जब कुछ तारे अपने जीवन के आखिर में पहुँचते हैं, तो वे 'सुपरनोवा' नाम की एक शानदार घटना में फट जाते हैं—यह ब्रह्मांड के सबसे शक्तिशाली धमाकों में से एक है। ये धमाके नए तारों और ग्रहों के बनने में अहम भूमिका निभाते हैं।

9. कुछ तारों की रोशनी बहुत पुरानी होती है

चूँकि रोशनी को अंतरिक्ष में यात्रा करने में समय लगता है, इसलिए आज हम जिन तारों की रोशनी देखते हैं, असल में उनकी यात्रा सैकड़ों या हज़ारों साल पहले शुरू हुई थी। असल में, हो सकता है कि उनमें से कुछ तारे अब मौजूद न हों, फिर भी उनकी रोशनी हम तक पहुँचती रहती है।

दिलचस्प तथ्य

साफ़ आसमान वाली रात में, इंसान की आँखें लगभग 2,000 से 5,000 तारे ही देख सकती हैं।

लेकिन, वैज्ञानिकों का मानना है कि ब्रह्मांड में तारों की कुल संख्या पृथ्वी के सभी समुद्र तटों पर मौजूद रेत के कणों से भी ज़्यादा हो सकती है।

"आसमान की ओर देखो और तारों को गिनो—अगर तुम उन्हें गिन सको" (उत्पत्ति 15:5)।

तारे हमें हैरान कर देते हैं, है ना? अगर परमेश्वर द्वारा बनाए गए तारे इतने शानदार हैं, तो सोचिए कि हमारे रचनाकार कितने महिमामय और महान होंगे! "जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे हमेशा-हमेशा तारों की तरह चमकेंगे" (दानिय्येल 12:3)।

पुराने समय में, नाविक, यात्री और बड़े रेगिस्तान पार करने वाले लोग रास्ता खोजने के लिए तारों पर निर्भर रहते थे। खासकर, ध्रुव तारा (पोलारिस) उन्हें सही उत्तर दिशा पहचानने और सही रास्ते पर बने रहने में मदद करता था।

जब यीशु का जन्म हुआ, तो एक खास तारे ने ज्ञानी लोगों को उन तक पहुँचाया। ठीक उसी तरह, आज अनगिनत युवा पाप के अंधेरे में भटक रहे हैं और उन्हें सही रास्ता नहीं मिल रहा है। मसीह के अनुयायी होने के नाते, हमारा काम उन्हें यीशु—जो कि 'मार्ग' हैं—की ओर ले जाना है।

परमेश्वर ने ज्योति को अंधेरे से अलग करने के लिए तारे बनाए। उसी तरह, हमें ज्योति की संतान बनकर जीने के लिए बुलाया गया है; हमें इस अंधेरी दुनिया में चमकना है और अपने जीवन के ज़रिए पाप और पवित्रता के बीच का फ़र्क दिखाना है।

तारे के खत्म हो जाने के बाद भी, उसकी रोशनी ब्रह्मांड में यात्रा करती रहती है। ठीक उसी तरह, जब हम पाप के प्रति मर जाते हैं, तभी पवित्रता की रोशनी हममें से चमक सकती है और बहुत से लोगों को सच्चाई के रास्ते पर ले जा सकती है।

(शोध जारी है...)

सुसमाचार जिसने पहाड़ों को पार किया

1886 में लंदन में जन्मे जेम्स आउट्रम फ्रेज़र के पास वह सब कुछ था जिसका एक नौजवान सपना देख सकता है। उन्होंने इंपीरियल कॉलेज लंदन से इंजीनियरिंग में ग्रेजुएशन किया था, वे एक बहुत ही टैलेंटेड पियानो बजाने वाले थे, और उनका भविष्य करियर के मौकों, पहचान, आर्थिक आजादी और आरामदायक ज़िंदगी से भरा था। फिर भी, परमेश्वर ने उनके लिए बिल्कुल अलग योजना बनाया था।

जेम्स की माँ, एनी फ्रेज़र, ने सालों तक ईमानदारी से प्रार्थना की थी कि उनका कोई बच्चा मिशनरी बने। कॉलेज में पढ़ते समय, जेम्स ने चीन के अग्रदूत मिशनरी हडसन टेलर की जीवनी पढ़ी। उन पन्नों के ज़रिए, परमेश्वर ने उनके हृदय से बात की। दुनियावी कामयाबी के पीछे भागने के बजाय, जेम्स ने अपनी ज़िंदगी चीन के लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने के लिए समर्पित करने का फैसला किया।

एक बुलाहट जो सबसे अनमोल है

1908 में, सिर्फ़ 22 वर्ष की उम्र में, जेम्स चीन के लिए रवाना हुए। पहुँचने के तुरंत बाद, उन्हें एहसास हुआ कि सुसमाचार का प्रचार करने के लिए सिर्फ़ यीशु के बारे में बात करने से कहीं ज़्यादा की ज़रूरत होती है। लोगों के दिलों तक पहुँचने से पहले, उन्हें उनकी भाषा और कल्चर को समझना था। उन्होंने बाज़ारों में रोज़मर्रा की बातें सुनने, नए शब्द और बातें सीखने में अनगिनत घंटे बिताए। चीनी लोगों से यह उम्मीद करने के बजाय कि वे उनके अनुसार से ढल जाएँगे, उन्होंने जानबूझकर स्वयं को उनके अनुसार से ढाल लिया।

जब भी अकेलापन और निराशा उन पर हावी हो जाती, तो वे पहाड़ों पर चढ़ जाते, घंटों प्रार्थना करते, परमेश्वर की आराधना करते और उनके वचन पर ध्यान करते। परमेश्वर के साथ वे शांत पल उनकी सेवा के पीछे छिपी ताकत बन गए।

प्रचार करने से पहले हृदय जीतना

कुछ साल बाद, जेम्स की मुलाकात लिसु नाम के एक आदिवासी समुदाय से हुई, जो दक्षिण-पश्चिमी चीन के दूर-दराज के पहाड़ों में रहता था। लिसु लोगों की सादगी, विनम्रता और अपनापन ने उन्हें बहुत छू लिया। जब उन्हें उनके बीच रहने का मौका मिला, तो उन्होंने उनके जीने के तरीके को पूरे दिल से अपना लिया। उन्होंने वही खाना खाया जो वे खाते थे, उन्हीं साधारण हालात में रहे, उनकी भाषा सीखी, उनके संस्कृति का सम्मान किया और उनके साथ सच्चे रिश्ते बनाए।

जेम्स का मानना था कि मिशनरियों को कभी भी लोगों को दूसरी संस्कृति अपनाने के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, उनका मानना था कि कभी न बदलने वाले सुसमाचार को ऐसे तरीकों से साँझा किया जाना चाहिए जिसे लोग सच में समझ सकें। इस तरीके से उन्हें लिसु लोगों का भरोसा मिला।

सेवकाई के पीछे का संघर्ष

सेवकाई का रास्ता चुनौतियों से भरा था। लिसु गाँव ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों पर फैले हुए थे। जेम्स अक्सर मुश्किल इलाकों से कई दिनों तक पैदल चलते थे, खतरनाक नदियाँ पार करते थे, खराब मौसम झेलते थे, और गाँव के साधारण घरों में रहते थे, सिर्फ़ उन लोगों तक पहुँचने के लिए जिन्होंने कभी यीशु का नाम नहीं सुना था। हालाँकि, उनकी सबसे बड़ी चुनौतियाँ सिर्फ़ शारीरिक नहीं थीं।

ऐसे लंबे दौर थे जब बहुत ही कम लोगों ने सुसमाचार पर प्रतिक्रिया दी। हालाँकि कई लोगों ने मन लगाकर सुना, लेकिन कई लोग अपनी पुरानी ज़िंदगी में लौट आए। उन्हें बीमारी, विरोध, निराशा और आध्यात्मिक अकेलेपन का सामना करना पड़ा। कभी-कभी, उन्होंने यह भी सवाल किया कि क्या उन्होंने सच में परमेश्वर की बुलाहट को समझा है।

लिसु लोग बुरी आत्माओं के गहरे डर में भी जीते थे और जीववादी परंपराओं को मानते थे। जो लोग मसीह को अपनाते थे, उन्हें अक्सर अपने परिवारों और गाँवों से बहिष्कार का सामना करना पड़ता था, और कई लोगों पर अपने नए विश्वास को छोड़ने का दबाव डाला जाता था। फिर भी जेम्स ने कभी हार नहीं मानी।

उन्हें यकीन हो गया कि सेवकाई की सबसे बड़ी जीते पहले प्रार्थना में जीती जाती हैं। सिर्फ़ उपदेश पर निर्भर रहने के बजाय, उन्होंने दुनिया भर में प्रार्थना करने वालों का एक नेटवर्क बनाया, जो ईमानदारी से लिसू लोगों के लिए बीच-बचाव करते थे। उन प्रार्थनाओं के ज़रिए, परमेश्वर ने मिशनरियों के आने से बहुत पहले ही हृदयों को तैयार करना शुरू कर दिया था।

जब प्रार्थना के द्वारा जागृति आई

जेम्स की लगन का आखिरकार ज़बरदस्त फल मिला। 1913 में, लिसू लोगों के बीच पहली बैप्टिज़्म सर्विस हुई। तब से, पूरे परिवार यीशु मसीह को मानने लगे। 1918 तक, 129 परिवारों के 600 से ज़्यादा लोगों ने मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया था। जागृति बढ़ती ही जा रही थी।

1929 में, जेम्स ने साथी मिशनरी रॉक्सी डायमंड से विवाह किया। अपनी दो बेटियों के साथ, उन्होंने पूरे दिल से सेवा में स्वयं को लगा दिया। 1930 के दशक में, लिसू समुदाय में एक ज़बरदस्त आध्यात्मिक जागृति आई। हज़ारों लोग यीशु मसीह में विश्वास करने लगे क्योंकि स्थानीय विश्वासियों ने हिम्मत से अपने लोगों के साथ सुसमाचार साँझा किया।

जेम्स समझ गए थे कि सच्ची सफलता अपने आस-पास एक सेवा बनाना नहीं है, बल्कि स्थानीय विश्वासियों को आगे बढ़ाना है। उन्होंने स्थानीय पासवानों को प्रशिक्षण दिया, गाँव के प्रचारकों को बढ़ावा दिया, स्थानीय कलीसिया अगुवों को तैयार किया, और स्वचलित, आत्म-निर्भर और स्वयं-प्रसारक कलीसियाओं को बनाने में मदद की। यह बदलाव इसलिए फैला क्योंकि आम लिसू मसीही 'मसीह' के लिए जोशीले गवाह बन गए।

एक जीवनकाल से पार की विरासत

जेम्स की सेवा प्रचार से भी आगे तक फैली। उन्होंने लिसू भाषा के लिए एक लिखी हुई स्क्रिप्ट बनाने में मदद की – जिसे अब फ्रेज़र अल्फाबेट के नाम से जाना जाता है – जिससे बाइबिल, भजन और मसीही पाठ्यक्रम सामग्री का उनकी अपनी भाषा में अनुवाद करना मुमकिन हो गया। इससे आने वाली पीढ़ियों के लिए लिसू भाषा और संस्कृति को बचाने में भी मदद मिली।

उनकी सेवा में कई खास योगदान थे:

- लोगों की मातृभाषा में सुसमाचार की घोषणा की।
- ऐसे लोगों के बीच सेवा कार्य शुरू किया जहाँ सुसमाचार नहीं पहुँचा था।
- सच्चे रिश्तों के ज़रिए लोगों को व्यक्तिगत रूप से यीशु से परिचय कराया।
- नए कलिसियाएं स्थापित किए और उन्हें आगे बढ़ाया।
- सही बाइबिल-संबंधी शिक्षाओं के ज़रिए विश्वासियों को तैयार किया।
- बाइबिल के अनुवाद में योगदान दिया।
- लिसु भाषा के लिए लिखित लिपि विकसित करने में मदद की।
- बाइबिल की सच्चाइयाँ सिखाने के लिए गीतों का इस्तेमाल किया।
- स्थानीय अगुओं को तैयार किया और प्रोत्साहित किया।
- स्व-शासित और आत्मनिर्भर कलिसियाएं स्थापित किए।
- प्रार्थना के आंदोलनों को प्रेरित और मज़बूत किया।
- आध्यात्मिक जागृति के लिए अथक परिश्रम किया।

1938 में, 52 साल की उम्र में, जेम्स फ्रेज़र प्रभु के पास चले गए। लेकिन उनकी कहानी वहीं खत्म नहीं हुई।

उन्होंने जो बीज बोए थे, उनसे भरपूर फल मिलते रहे। आज, चीन, म्यांमार और थाईलैंड में लाखों लिसु विश्वासी यीशु मसीह का अनुसरण करते हैं। उनका जीवन और सेवा कार्य दुनिया भर के मिशनरियों को प्रेरित करते रहते हैं, खासकर प्रार्थना, सांस्कृतिक समझ और स्थानीय अगुओं को तैयार करने के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता के कारण।

"पहाड़ों पर उसके पाँव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है." (यशायाह 52:7)।

आज के युवाओं के लिए एक चुनौती

जेम्स फ्रेज़र ने कभी एक इंजीनियर के तौर पर इमारतें बनाने का सपना देखा था। इसके बजाय, परमेश्वर ने एक पूरे समुदाय के आध्यात्मिक इतिहास को बदलने के लिए उनका इस्तेमाल किया।

प्रिय युवा मित्रों, परमेश्वर आपके ज्ञान, प्रतिभा, पेशे या कौशल का इस्तेमाल अपने राज्य के लिए कर सकते हैं। या शायद वह आपको ऐसे रास्ते पर ले जाएँ जिसकी आपने कभी उम्मीद न की हो। उनकी योजना चाहे जो भी हो, स्वयं को पूरी तरह से उनकी इच्छा के अधीन कर दें।

इतिहास हमें याद दिलाता है कि एक युवा व्यक्ति जो पूरे हृदय से परमेश्वर की बुलाहट का पालन करता है, वह पीढ़ियों को प्रभावित कर सकता है। सोचिए अगर हर युवा विश्वासी किसी गाँव, कॉलेज कैंपस या ऐसे समुदाय को अपना ले जहाँ सुसमाचार नहीं पहुँचा है, और प्रार्थना, करुणा और अटूट प्रतिबद्धता के साथ सेवा करे, तो परमेश्वर क्या कुछ नहीं कर सकते।

अगली बड़ी आध्यात्मिक जागृति शायद एक समर्पित जीवन से शुरू हो सकती है।

एक सच्चा मित्र

हाल के हफ़्तों में, न्यूज़ चैनलों और मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर एपस्टीन फ़ाइलों के बारे में बहुत चर्चा हुई है। ज़्यादातर ध्यान इस बात पर गया है कि दुनिया के कई बड़े नेताओं और अमीर लोगों के एक खास व्यक्ति के साथ अलग-अलग वजहों से संबंध थे। इन रिपोर्टों की वजह से उनमें से कई लोगों की काफ़ी आलोचना हुई और उन्हें शर्मिंदगी उठानी पड़ी। इन सबके पीछे एक बड़ी वजह गलत मित्रता का प्रभाव था।

जब संसार के जाने-माने बिज़नेसमैन और समाज-सेवक बिल गेट्स से उन रिपोर्टों के बारे में पूछा गया जिनमें कहा गया था कि वे लगभग चार साल तक जेफ़री एपस्टीन के संपर्क में रहे थे, तो उन्होंने कहा, "उनके साथ मेरी हर मुलाक़ात एक गलती थी... मुझे उनके साथ बिताए हर पल पर अफ़सोस है।" उन्होंने यह भी माना कि समाज-सेवा और आर्थिक कामों के लिए उन्होंने जो योजनाएँ साथ मिलकर बनाई थीं, उनका आख़िरकार कोई नतीजा नहीं निकला। ज़रा सोचिए—सिर्फ़ एक गलत मित्रता ने दुनिया के कुछ सबसे प्रभावशाली लोगों को शर्मिंदगी और आलोचना का सामना करने पर मजबूर कर दिया।

हम आखिरी दिनों में जी रहे हैं। 2,000 साल से भी पहले, बाइबल ने चेतावनी दी थी कि लोग स्वयं से प्रेम करने वाले, पैसे के लोभी, अपशब्द बोलने वाले, माता-पिता का कहना न मानने वाले, बिना स्वाभाविक स्नेह के, बिना संयम के, क्रूर और लापरवाह हो जाएँगे (2 तीमुथियुस 3:1–5)। इसलिए धर्मग्रंथ हमें ऐसे लोगों से दूर रहने की सलाह देते हैं।

पिछले जून में, तमिलनाडु के शिवगंगा ज़िले में एक दुखद घटना हुई। दसवीं कक्षा का एक छात्र एक जलाशय में गंभीर चोटों के साथ मृत पाया गया। जाँच से पता चला कि कुछ बड़े मित्रों के साथ हुई मामूली बहस हिंसा में बदल गई, जिसके कारण उसकी मौत हो गई। ज़रा सोचिए। बाइबल कहती है कि मित्र मुसीबत के समय मदद करता है। फिर भी आज, कई बार मित्र ही मुसीबत की वजह बन जाते हैं। हम ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ लोग अक्सर अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए दूसरों का इस्तेमाल करते हैं, खतरा आने पर उन्हें छोड़ देते हैं और स्वयं को बचाने के लिए भाग जाते हैं। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि बाइबल इन्हें "भयानक समय" कहती है।

यीशु समझते थे कि इस दुनिया में पिता के अटूट प्यार के अलावा सब कुछ अस्थायी है। इसीलिए उन्होंने लूका 15 में ' उड़ाऊ पुत्र ' का दृष्टांत सुनाया। छोटा बेटा कहीं और साथ पाने की चाहत में अपने पिता का प्रेम भरा साथ छोड़कर चला गया। आख़िरकार, उन साथियों ने न सिर्फ़ उसे पाप भरी ज़िंदगी की ओर धकेला, बल्कि सब कुछ गँवा देने के बाद उसे छोड़ भी दिया। टूटा हुआ, शर्मिंदा, अपराध-

बोध से दबा हुआ और स्वयं से नफ़रत करता हुआ, वह सूअरों के खाने के पास बैठा था।

प्रिय मित्रों, दुनिया ऐसे ही काम करती है। पहले, यह लोगों को गलत रास्ते पर ले जाती है। फिर, यह उन्हें बेइज़्ज़त करती है। बाइबल कहती है कि "पूरा संसार शैतान के वश में है" (1 यूहन्ना 5:19)। शैतान पहले लोगों को पाप करने के लिए उकसाता है और फिर उन्हीं पापों के लिए उन्हें दोषी ठहराता है जिनके लिए उसने उन्हें उकसाया था।

लेकिन एक ऐसी मित्रता है जो कभी नहीं टूटती। यह वह मित्रता है जो हमारी यीशु के साथ और उन लोगों के साथ है जो उनके अपने हैं। अब्राहम, जो विश्वास के पिता थे, उन्हें "परमेश्वर का मित्र" कहा गया (याकूब 2:23)। मूसा, जिन्होंने इस्राएल के लोगों की अगुवाई की, उनकी भी परमेश्वर के साथ गहरी मित्रता थी (निर्गमन 33:11)। यीशु ने स्वयं अपने चेलों से कहा, "मैं अब तुम्हें दास नहीं कहता... बल्कि, मैंने तुम्हें मित्र कहा है।"

आप सोच सकते हैं, "क्या इन लोगों ने गलतियाँ नहीं कीं?" बेशक उन्होंने कीं। वे कई बार नाकाम रहे। लेकिन उन्होंने अपनी नाकामियों को पहचाना, पश्चताप किया और परमेश्वर की आज्ञा मानने का फैसला किया। उन्होंने कभी स्वयं से परमेश्वर का मित्र होने का दावा नहीं किया। परमेश्वर ने स्वयं उन्हें अपना मित्र कहा। परमेश्वर ने उन्हें उनकी नाकामियों की याद नहीं दिलाई या उनकी गलतियों के लिए उन्हें शर्मिंदा नहीं किया, क्योंकि प्रेम बहुत सारे पापों को ढाँप लेता है। जो परमेश्वर प्रेम है, वह आपकी नाकामियों को उजागर करने में खुशी नहीं मनाता। अगर आप उसकी प्यार भरी बाहों में जाते हैं, तो आपको भरपूर माफ़ी मिलेगी।

यीशु कोई साधारण मित्र नहीं हैं। जब हम स्वयं से प्रेम करने के काबिल नहीं थे, तब भी उन्होंने हमसे प्रेम किया। उन्होंने हमारी जगह ली, हमारी सज़ा सही और हमारे लिए अपनी जान दे दी। सबसे बड़ा पाप उस व्यक्ति से प्रेम न करना है जिसने हमसे इतना गहरा प्रेम किया। यीशु का प्रेम ऐसा ही बेमिसाल है—हमारे मित्र और हमारी आत्माओं के चरवाहे का प्रेम।

इस टूटी-फूटी दुनिया में, सच्चे मित्र मिलना आसान नहीं है। इसलिए अगर आपको लगता है कि आपका कोई सच्चा मित्र नहीं है, तो निराश न हों। यहाँ तक कि यहूदा, जो उन्हें धोखा देने आया था, उसे भी यीशु ने "मित्र" कहकर बुलाया। इसी तरह, हमें दूसरों से प्रेम करने के बजाय सिर्फ़ उनकी गलतियाँ निकालने में अपनी ज़िंदगी नहीं बितानी चाहिए। हो सके तो हमें यीशु के उदाहरण का पालन करना चाहिए, जो अपने दुश्मनों को भी मित्र बनाने आए थे। और अगर ऐसा करना मुमकिन न हो, तो हमें समझदारी से नुकसान पहुँचाने वाली मित्रता से दूर रहना चाहिए (नीतिवचन 24:1)।

आखिरकार, पूरी दुनिया पा लेने का क्या फायदा अगर आप अपनी आत्मा ही खो दें? इसलिए मित्र चुनते समय हर दिन सावधान रहें। कबूतरों की तरह भोले और साँपों की तरह चतुर बनें। आखिर में, यीशु ही एकमात्र ऐसा मित्र हैं जो आपको कभी नहीं छोड़ेंगा।

एक सच्चा मित्र तब प्रेम से आपके साथ चलता है, जब दुनिया साथ छोड़ देती है।

एक सच्चा मित्र तब दयालुता के साथ आपकी त्रुटियों को सुधारता है जब अन्य लोग आपकी निंदा कर रहे होते हैं।

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 30/08/2026 और 29/11/2026 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

Revival IGNITERS

संपर्क संख्या : +919750955548

YouTube Jesus Redeems - Hindi

Comforter DIGITAL CHANNEL www.comfortertv.com

प्रार्थना के विषय

August 2026

लघु स्तरीय और सूक्ष्म उद्यमी

- SSI/MSME सेक्टर भारत के औद्योगिक उत्पादन में लगभग 40% और देश के कुल निर्यात में लगभग 50% का योगदान देता है।
- यह सेक्टर रोज़गार पैदा करने और भारत की आर्थिक वृद्धि को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है।
- कपड़ा बनाने वाली इकाइयाँ, बेकरी, छोटे स्तर पर खाद्य उत्पादन करने वाले उद्योग, फ़र्नीचर की वर्कशॉप और हस्तशिल्प उद्यम SSI सेक्टर के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं।

प्रार्थना-विषय

- आइए प्रार्थना करें कि छोटे उद्यमी अपने कारोबार को बढ़ाने और मज़बूत करने के लिए समय पर लोन और आर्थिक मदद पा सकें।
- आइए प्रार्थना करें कि कच्चे माल की बढ़ती लागत और कैश फ़्लो में देरी जैसे आर्थिक बोझ उनके कारोबार की वृद्धि में बाधा न बनें।
- आइए प्रार्थना करें कि छोटे उद्योग और अधिक रोज़गार के अवसर पैदा करें और आर्थिक विकास के ज़रिए समाज के लिए वरदान बनें।
- आइए प्रार्थना करें कि बड़ी कंपनियाँ छोटे उद्यमियों की कड़ी मेहनत का फ़ायदा न उठाएँ, बल्कि ईश्वर उनकी रक्षा करे और उनकी मेहनत के अनुसार उन्हें फल दे।

भारत के आदिवासी समुदाय

- 10.4 करोड़ लोग—जो भारत की आबादी का 8.6% हैं—आदिवासी समुदायों से हैं, जिससे भारत दुनिया में सबसे ज़्यादा आदिवासी आबादी वाले देशों में से एक बन गया है।
- 45.3% गरीबी दर: ग्रामीण इलाकों में रहने वाले आदिवासियों की एक बड़ी संख्या अभी भी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है।
- 59% साक्षरता दर: आदिवासी समुदायों में साक्षरता का स्तर राष्ट्रीय औसत से कम है।

प्रार्थना-विषय

- आइए प्रार्थना करें कि भारत के मूल आदिवासी समुदायों की पुश्तैनी ज़मीन माइनिंग प्रोजेक्ट या औद्योगिक विकास के लिए न छीनी जाए, और उनके ज़मीन के अधिकारों और आजीविका की रक्षा हो।
- आइए प्रार्थना करें कि उन्हें पीढ़ियों से चली आ रही गरीबी और कर्ज़ से मुक्ति मिले, और उन्हें सम्मानजनक रोज़गार और आर्थिक आज़ादी मिले।
- आइए प्रार्थना करें कि दूर-दराज़ के गाँवों में आदिवासी बच्चों और माताओं को प्रभावित करने वाले कुपोषण को खत्म किया जाए, और उन्हें साफ़ पीने का पानी और अच्छी स्वास्थ्य सेवाएँ मिलें।
- आइए प्रार्थना करें कि आदिवासी बच्चों को अपनी मातृभाषा में अच्छी शिक्षा मिले और साथ ही वे अपने समुदायों के भीतर अपनी अनोखी संस्कृति को बचाकर रखें और उसका सम्मान करें।

दुनिया भर के देशों में अकाल

- युद्ध और हिंसक संघर्ष दुनिया भर में भोजन के संकट के मुख्य कारणों में से हैं।
- यूरिया सहित खाद की बढ़ती कीमतों ने दुनिया भर में कृषि उत्पादन पर काफी असर डाला है।
- जलवायु परिवर्तन और भोजन के परिवहन में रुकावटों के कारण दुनिया के कई हिस्सों में भोजन की कमी हो गई है।
- अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सहायता में कमी के कारण वैश्विक खाद्य संकट के दीर्घकालिक समाधान लागू करना मुश्किल हो गया है।

प्रार्थना-विषय

- आइए हम प्रार्थना करें कि देशों के बीच युद्ध बंद हों, प्रभु शांति स्थापित करें, और भोजन की आपूर्ति बिना किसी रुकावट के जरूरतमंदों तक पहुंचे।
- आइए हम प्रार्थना करें कि प्रभु समय पर बारिश भेजकर, जलवायु परिवर्तन, गंभीर सूखे और खराब फसल के प्रभावों को उलटकर पृथ्वी पर दया करें।
- आइए हम प्रार्थना करें कि बढ़ती कीमतों के कारण पीड़ित गरीब और कमजोर लोगों की रक्षा हो, और कृषि उत्पादों और खाद की लागत कम हो ताकि अकाल को रोका जा सके।
- आइए हम प्रार्थना करें कि विश्व के नेता बिना स्वार्थ के काम करें और वैश्विक भुखमरी से निपटने और अकाल से पीड़ित लोगों को आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए परमेश्वरीय ज्ञान प्राप्त करें।

युवाओं में बढ़ता हुआ छल

- अपने स्कूल के काम के अलावा, एक औसत युवा मनोरंजन के लिए हर दिन कई घंटे मोबाइल उपकरणों और डिजिटल स्क्रीन पर बिताता है।
- युवाओं का एक बड़ा वर्ग ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने मित्रों के साथ लगातार जुड़ा रहता है।.
- युवाओं में ड्रग्स और शराब का बढ़ता इस्तेमाल एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है।
- कई युवा अपने स्कूल के दिनों में ही शराब और अन्य विनाशकारी आदतों के संपर्क में आ रहे हैं।

प्रार्थना-विषय

- आइए हम प्रार्थना करें कि युवाओं में ड्रग्स, शराब और वेपिंग के बढ़ते सामान्यीकरण को रोका जाए, और शैतान की उस पकड़ को तोड़ा जाए जो उनके जीवन को नष्ट करना चाहती है।
- आइए हम प्रार्थना करें कि अकेलेपन, अवसाद और निराशा के कारण पैदा हुए खालीपन को भरा जाए—क्षणिक सुखों से नहीं—बल्कि परमेश्वर के प्रेम से।
- आइए हम प्रार्थना करें कि युवा पीढ़ी मसीह-विरोधी की भावना और इस दुनिया के तौर-तरीकों से दूर हो, परमेश्वर के सत्य को जाने और एक पवित्र पीढ़ी के रूप में उभरे।
- आइए हम प्रार्थना करें कि युवा पीढ़ी मसीह-विरोधी की भावना और इस दुनिया के तौर-तरीकों से दूर हो, परमेश्वर के सत्य को जाने और एक पवित्र पीढ़ी के रूप में उभरे।

कॉलेज की डिग्री के साथ UPSC की तैयारी कैसे करें

कॉलेज की पढ़ाई और UPSC (यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन) की तैयारी के बीच तालमेल बिठाना मुश्किल लग सकता है, लेकिन सही रणनीति और लगातार कोशिश से इसे आसानी से किया जा सकता है।

1. सही सोच अपनाएं

धीरे-धीरे और लगातार आगे बढ़ने का तरीका अपनाएं। याद रखें, तेज़ी से पढ़ने के बजाय लगातार पढ़ते रहना ज़्यादा ज़रूरी है। कभी-कभी बहुत देर तक पढ़ने के बजाय रोज़ाना **3-5** घंटे पढ़ना कहीं ज़्यादा असरदार होता है।

2. अपने समय का बुद्धिमानी से इस्तेमाल करें

हफ़्ते के दिनों में (कॉलेज के दिनों में):

सुबह **1-2 घंटे** NCERT या स्टैंडर्ड रेफरेंस किताबें पढ़ने में लगाएं। कॉलेज में खाली समय (फ्री पीरियड) का इस्तेमाल जल्दी से दोहराने (रिविज़न) के लिए करें। शाम को एक घंटा 'द हिंदू' या **'द इंडियन एक्सप्रेस'** जैसे अख़बार पढ़कर करेंट अफेयर्स (समसामयिक मामलों) की जानकारी लें। रात में **1-2 घंटे** अपने नोट्स दोहराने में लगाएं। **रोज़ाना 3-5 घंटे** की तैयारी काफ़ी है।

वीकेंड (छुट्टी के दिन):

6-8 घंटे पढ़ाई करें, हफ़्ते भर में पढ़ी गई चीज़ों को दोहराएं, मॉक टेस्ट दें और अपनी कमज़ोरियों को पहचानकर उन्हें सुधारें।

3. स्मार्ट स्टडी स्ट्रेटेजी(बुद्धिमान अध्ययन रणनीति) अपनाएं

एक साथ कई विषयों को पढ़ने के बजाय हर **दिन एक विषय पर ध्यान** दें। उदाहरण के लिए, सोमवार को इतिहास, मंगलवार को **राजनीति विज्ञान (पॉलिटी) पढ़ें** और दूसरे विषयों के लिए भी यही तरीका अपनाएं।

हर विषय के लिए एक ही स्टैंडर्ड सोर्स (किताब) चुनें और कई किताबें जमा करने के बजाय उसी को बार-बार दोहराएं।

जैसे, पॉलिटी के लिए **एम. लक्ष्मीकांत की 'इंडियन पॉलिटी'** और इतिहास के लिए **बिपन चंद्र** की **'इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस'** का इस्तेमाल करें।

CAREER Guidance

4. करेंट अफेयर्स(हाल ही की घटनाएँ) को आसान रखें

रोज़ाना एक अख़बार और महीने की करेंट अफेयर्स मैगज़ीन पढ़ें। हर दिन एक घंटा ध्यान लगाकर पढ़ना काफ़ी है। सिर्फ़ सबसे ज़रूरी घटनाओं को शामिल करते हुए छोटे और काम के नोट्स बनाएं।

5. ऐसे नोट्स बनाएं जिन्हें दोहराना आसान हो

छोटे और साफ़-सुथरे नोट्स बनाएं, जिसमें **हर पेज पर एक ही टॉपिक हो।**
नोट्स को आसान रखने से दोहराना तेज़ और ज़्यादा असरदार होगा।

6. उत्तर लिखने की प्रैक्टिस करें

हर हफ़्ते 2-3 उत्तर लिखें। वीकेंड प्रैक्टिस के लिए सबसे अच्छा समय है।
नियमित रूप से उत्तर लिखने से आपकी स्पीड, प्रेजेंटेशन और कॉन्फिडेंस बेहतर होगा।

7. दोहराने (रिविज़न) को प्राथमिकता दें

रविवार का दिन सिर्फ़ दोहराने के लिए रखें। एक आसान नियम अपनाएं:
"कम पढ़ें, ज़्यादा दोहराएं।" लगातार दोहराने से ही जानकारी लंबे समय तक याद रहने वाले ज्ञान में बदलती है।

8. इन आम गलतियों से बचें

अपनी कॉलेज की पढ़ाई को नज़रअंदाज़ न करें। **रोज़ाना 10 या उससे ज़्यादा घंटे** पढ़ने की कोशिश न करें, क्योंकि इससे अक्सर थकान और तनाव (बर्नआउट) हो सकता है। सबसे ज़रूरी बात, खुद पर बेवजह दबाव न डालें। UPSC की तैयारी एक मैराथन की तरह है, न कि स्प्रिंट की तरह।

खास टिप्स

जब भी हो सके, अपने कॉलेज के विषयों को UPSC सिलेबस से जोड़ें। यात्रा के समय का इस्तेमाल करें—जैसे करंट अफेयर्स को दोहराना या एजुकेशनल कंटेंट सुनना। सोशल मीडिया, फालतू WhatsApp बातचीत और समय बर्बाद करने वाली दूसरी गतिविधियों से ध्यान भटकने न दें।

मुख्य बात

अगर आप अपनी डिग्री के साथ-साथ **2-3 साल तक लगातार तैयारी करते हैं,** तो ग्रेजुएशन पूरा होने तक आप UPSC के लिए तैयार हो जाएंगे। UPSC में सफलता सबसे ज़्यादा देर तक पढ़ने से नहीं, बल्कि स्मार्ट तरीके से पढ़ने और लगातार तैयारी करने से मिलती है।

मेडिसिन के बजाय साइबर सिक्योरिटी को चुनना और अमेरिका की एक बड़ी IT कंपनी में काम करना

ब्रदर गॉडसन के साथ एक प्रेरणादायक बातचीत

अपने माता-पिता के उन्हें डॉक्टर बनते देखने के सपने को पीछे छोड़कर, ब्रदर गॉडसन ने साइबर सुरक्षा(सिक्योरिटी) में अपने जुनून को आगे बढ़ाने का फैसला किया। आज, वह अमेरिका की एक बड़ी IT कंपनी में वरिष्ठ सुरक्षा सलाहकार(सीनियर सिक्योरिटी कंसल्टेंट) के तौर पर काम कर रहे हैं। आइए उनसे उनके सफर, चुनौतियों और इस बात के बारे में जानते हैं कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें आज इस मुकाम तक पहुँचाया।

प्रभु की स्तुति हो, ब्रदर! क्या आप हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में बता सकते हैं?

प्रभु की स्तुति हो! मेरा नाम गॉडसन है और मैं तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु से हूँ। हमारे परिवार में मेरे पिता, माँ, बड़े भाई और मैं हूँ। मेरे माता-पिता दर्जी का काम करते हैं और मेरा भाई एक IT कंपनी में नौकरी करता है। हम एक निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार से हैं। हालाँकि मेरे माता-पिता ने हमें पालने-पोसने के लिए बहुत मेहनत की, लेकिन सबसे खास बात थी परमेश्वर के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा।

जब मैं अपने बचपन के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे अपने माता-पिता द्वारा हमारी परवरिश के तरीके में व्यवस्थाविवरण 6:4–9 की एक सुंदर झलक दिखाई देती है। चाहे हम सोने जा रहे हों, साथ टहल रहे हों, यात्रा कर रहे हों या खाना खा रहे हों, परमेश्वर के बारे में बातचीत हमेशा हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा होती थी। असल में, खाना खाने से पहले हमें हर दिन बाइबल का एक वचन याद करना होता था! बहुत कम उम्र से ही उन्होंने हमारे जीवन को परमेश्वर के वचन में पिरो दिया था।

बहुत बढ़िया! चूँकि आपके माता-पिता ने आपको परमेश्वरीय वातावरण में पाला-पोसा, तो बड़े होने पर आपका सपना क्या था?

नौवीं कक्षा तक, मेरा अपना कोई खास सपना नहीं था। इसलिए, मैंने बस अपने माता-पिता के सपने को ही अपना लक्ष्य मान लिया। वे चाहते थे कि मैं NEET परीक्षा पास करके डॉक्टर बनूँ। इसी सोच के साथ, जब मैं दसवीं कक्षा में था, तो उन्होंने ₹60,000 उधार भी लिए ताकि मैं 10वीं, 11वीं और 12वीं कक्षा के बायोलॉजी सिलेबस की पढ़ाई समय से पहले शुरू कर सकूँ। उस सपने को पूरा करने में मेरी मदद करने के लिए उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार सब कुछ किया।

अजीब बात यह है कि उसी दौरान मुझे साइबर सिक्योरिटी के प्रति अपने जुनून का पता चला।
तब भी, मेरे माता-पिता की सबसे बड़ी इच्छा यही थी कि मैं डॉक्टर बनूँ।

क्या आपने आखिरकार अपने माता-पिता का सपना पूरा किया?

जब मैं नौवीं और दसवीं कक्षा में पढ़ रहा था, तो मैंने कुछ मित्रों को सोशल मीडिया अकाउंट हैक करने के बारे में बात करते हुए सुना। उस बातचीत ने मुझमें हैकिंग और साइबर सिक्योरिटी के बारे में जानने की उत्सुकता जगाई।

मैं और सीखना चाहता था, इसलिए मैंने इस विषय के बारे में जानने के लिए अपने पिता का मोबाइल फोन इस्तेमाल करना शुरू किया। लेकिन मेरे पास सही डिवाइस नहीं थे, और पिता का फोन मिलना भी आसान नहीं था। बारहवीं कक्षा में सब कुछ बदल गया जब सरकार ने छात्रों को मुफ्त लैपटॉप दिए। वह लैपटॉप मेरी ज़िंदगी का एक अहम मोड़ बन गया।

जबकि मेरे कई मित्र अपने लैपटॉप का इस्तेमाल मुख्य रूप से गेमिंग के लिए करते थे, मैंने अपने लैपटॉप का इस्तेमाल सिर्फ़ साइबर सिक्योरिटी सीखने के लिए किया। मेरे माता-पिता को पता नहीं था कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। हालाँकि अब मेरे पास लैपटॉप था, फिर भी मेरे पास इंटरनेट की सुविधा नहीं थी। लेकिन सही समय पर, परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से उस ज़रूरत को भी पूरा कर दिया।

यह बहुत बढ़िया है! परमेश्वर ने लैपटॉप के लिए आपकी इच्छा पूरी की। लेकिन साइबर सिक्योरिटी सीखने के लिए बहुत कुछ सीखना पड़ता है। आपने इसकी पढ़ाई कैसे की?

कोविड-19 महामारी के दौरान, IDEA ने आधी रात 12:00 बजे से सुबह 6:00 बजे के बीच मुफ्त इंटरनेट सुविधा दी। मैंने उस मौके का पूरा फ़ायदा उठाया। हर रात, मैं आधी रात से सुबह 3:00 या 4:00 बजे तक साइबर सिक्योरिटी की पढ़ाई करता, थोड़ी देर सोता और फिर स्कूल चला जाता। ज़ाहिर है, मेरे माता-पिता मुझे पूरी रात लैपटॉप पर बिताते देखकर खुश नहीं थे क्योंकि उन्हें समझ नहीं आता था कि मैं असल में क्या सीख रहा हूँ।

अगर मैं किसी व्यवसायिक प्रशिक्षण संस्थान(प्रोफेशनल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट) में जाता, तो इसमें लाखों रुपये खर्च होते। लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह से, मुझे बिना एक भी पैसा खर्च किए सब कुछ सीखने का मौका मिला।

जैसे-जैसे मैं सीखता गया, मेरी स्किल्स तेज़ी से बढ़ने लगीं। आखिरकार, साइबर सिक्योरिटी में महारत हासिल करने का मुझमें इतना जुनून आ गया कि मैंने नौकरी पाने के बारे में सोचना छोड़ दिया और पूरी तरह से सीखने पर ध्यान दिया। मैंने जो कुछ भी सीखा, उसे टेक्निकल ब्लॉग लिखकर रिकॉर्ड करना भी शुरू कर दिया। लगभग एक साल तक, मैंने हर दिन कई घंटे पढ़ाई में बिताए। फिर भी उस समय, मुझे अंदाज़ा नहीं था कि साइबर सिक्योरिटी एक पूरा करियर बन सकता है या इस क्षेत्र में प्रोफेशनल और कानूनी तौर पर काम करना भी संभव है।

तो, क्या आप नौकरी की तलाश नहीं कर रहे थे? और क्या आपने अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी कर ली थी?

बारहवीं कक्षा पूरी करने के बाद छुट्टियों में, मैंने बेंगलुरु की एक कंपनी में इंटर्न के तौर पर काम शुरू किया, जहाँ मुझे हर महीने ₹25,000 का स्टाइपेंड मिलता था। यह पहला मौका था जब मेरे माता-पिता को साइबर सिक्योरिटी सीखने में बिताई गई मेरी उन रातों की मेहनत का फल दिखने लगा था। इसके बाद, मैंने बैचलर ऑफ़ कंप्यूटर एप्लीकेशन (BCA) प्रोग्राम में दाखिला लिया। हालाँकि, इसके बाद का सफ़र आसान नहीं था।

मैंने साइबर सिक्योरिटी में फुल-टाइम नौकरी के लिए अपना पहला इंटरव्यू बहुत उम्मीद के साथ दिया। अफ़सोस की बात है कि मुझे अस्वीकार कर दिया गया क्योंकि मुझे इस फ़ील्ड के कुछ पहलुओं की बहुत व्यवहारिक समझ नहीं थी। उस अस्वीकृति से मुझे बहुत बुरा लगा। पहली बार, मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या मैंने गलत करियर चुना है।

मैंने ज़ोहो (Zoho) जैसी कंपनियों में भी आवेदन किया, लेकिन मुझे कभी कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली।

मेरे माता-पिता, जिन्होंने मुझ पर इतना भरोसा किया था, बहुत निराश हुए। उलझन और मायूसी में मैंने एक और मुश्किल फ़ैसला लिया—बिना किसी से सलाह लिए मैंने कॉलेज छोड़ दिया।

उसके बाद क्या हुआ?

उसी अनिश्चित दौर में मुझे एक साइबर सिक्योरिटी कंपनी के CEO से नौकरी के मौके के बारे में एक ईमेल मिला। मैंने तुरंत अप्लाई किया। हफ़्तों तक कोई जवाब नहीं आया और आखिरकार मैंने उम्मीद छोड़ दी। लेकिन फिर कुछ ऐसा हुआ

जिसकी मैंने उम्मीद नहीं की थी। उसी CEO ने 'कैप्चर द फ्लैग' (CTF) प्रतियोगिता के बारे में मेरी एक पोस्ट देखी, जिसे मैंने सफलतापूर्वक पूरा किया था। मेरे काम और व्यावहारिक कौशल से प्रभावित होकर, उन्होंने मुझसे स्वयं संपर्क किया और मुझे U.S. की एक कंपनी में नौकरी की पेशकश की, जिसमें मेरी सैलरी U.S. डॉलर में मिलनी थी। उस समय मैं सिर्फ़ 19 या 20 साल का था। परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं अब पिछले चार वर्ष से उस कंपनी में काम कर रहा हूँ।

इस आशीर्वाद का आपके परिवार पर क्या असर पड़ा?

जब मैं कंपनी में शामिल हुआ, हमारा परिवार कर्ज़ में डूबा हुआ था। कई सालों से वह आर्थिक बोझ हम पर भारी पड़ रहा था। लेकिन परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से, हमें उन कर्ज़ों को हमारी सोच से कहीं ज़्यादा जल्दी चुकाने में मदद की। इतना ही नहीं, परमेश्वर की वफ़ादारी की वजह से हमारे शहर में एक अच्छा घर बनाने का हमारे परिवार का लंबे समय से देखा गया सपना भी सच हो रहा है। पीछे मुड़कर देखने पर, मैं बस यही कह सकता हूँ कि आज हमें जो भी आशीषें मिल रहीं हैं, वह परमेश्वर की भलाई और प्रावधान की गवाही है।

इस सफ़र के दौरान आपका आध्यात्मिक जीवन कैसे बदला?

हालाँकि मेरी परवरिश धार्मिक माहौल में हुई थी, लेकिन लंबे समय तक मेरा विश्वास सिर्फ़ एक दिनचर्या से ज्यादा कुछ नहीं था। मैं चर्च जाता था, प्रार्थना करता था और मसीही गतिविधियों में हिस्सा लेता था, लेकिन मेरा जीवन पूरी तौर से परमेश्वर को समर्पित नहीं था।

मेरी जवानी के दिनों में ही सब कुछ बदलना शुरू हुआ। दूसरों के सिखाए विश्वास को मानने के बजाय, मैंने परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानने की कोशिश शुरू की। उस दौर ने उनके साथ मेरे रिश्ते को बदल दिया।

मेरा विश्वास अब आदत या पारिवारिक परंपरा पर आधारित नहीं था—यह असली, व्यक्तिगत और मज़बूती से जमा हुआ विश्वास बन गया। दिलचस्प बात यह है कि उसी समय मेरी ज़िंदगी में एक के बाद एक मौकों के दरवाज़े खुलने लगे। पीछे मुड़कर देखने पर, कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे ये आशीषें देने से पहले ही परमेश्वर मेरे पूरे मन से उनके पास आने का इंतज़ार कर रहे थे।

उन वर्षों में भी, जब मैं बस मसीही परंपराओं का पालन कर रहा था और उनके साथ मेरा कोई सच्चा रिश्ता नहीं था, तब भी वे चुपचाप मेरे जीवन का मार्गदर्शन कर रहे थे। आज, मैं साफ़ तौर पर देख सकता हूँ कि मेरी यात्रा के हर पड़ाव पर उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया, तब भी जब मुझे इसका पूरा एहसास नहीं था।

जो युवा यह इंटरव्यू पढ़ रहे हैं, उनसे आप क्या कहना चाहेंगे?

नीतिवचन 21:31 में कहा गया है, "युद्ध के दिन के लिए घोड़ा तैयार किया जाता है, लेकिन जीत प्रभु के हाथ में होती है।"

यह वचन मेरी अपनी यात्रा का बहुत सुंदर ढंग से वर्णन करता है। मेरा जीवन बिना सोए गुज़री रातों, लगातार कड़ी मेहनत, निराशाओं और असफलताओं से भरा रहा है। लेकिन अंत में, जिसने मुझे जीत दिलाई, वे प्रभु ही थे।

आज, हममें से हर किसी के हाथ में एक सामर्थी साधन है—इंटरनेट की सुविधा वाला स्मार्टफोन।

वही तकनीक या तो हमें मूल्यवान कौशल विकसित करने, एक सार्थक करियर बनाने और परमेश्वर के करीब आने में मदद कर सकती है, या फिर यह धीरे-धीरे हमारा समय बर्बाद कर सकती है, हमारा ध्यान भटका सकती है और हमें अपने उद्देश्य को पूरा करने से रोक सकती है। चुनाव हमारा है।

इसलिए, अपने भविष्य को यीशु को सौंप दें। वे आपके जीवन के लिए तैयार किए गए रास्ते को जानते हैं। वे आपको सही दिशा दिखाएंगे, सही समय पर सही दरवाज़े खोलेंगे, और आपको वह अनुग्रह और जुनून देंगे जिससे आप उस बुलाहट को पूरा कर सकें जो उन्होंने आपके जीवन के लिए तय की है। उस पर भरोसा रखें, सीखते रहें, कड़ी मेहनत करें, और उस उद्देश्य को पाने की कोशिश कभी न छोड़ें जिसे उन्होंने आपके लिए बनाया है...!

समाचार

जून में जीएसटी(GST) संग्रह बढ़कर ₹1.95 लाख करोड़ हुआ, 14% की बढ़ोतरी

आयात पर जीएसटी संग्रह में उछाल से कुल रेवेन्यू में बढ़ोतरी हुई, जबकि घरेलू टैक्स वसूली में मामूली बढ़त देखी गई।

जून 2026 के लिए भारत का कुल गुड्स एंड सर्विसेज़ टैक्स (GST) संग्रह बढ़कर ₹1,94,812 करोड़ हो गया, जो पिछले साल इसी महीने की तुलना में 13.9% ज़्यादा है। जून के आंकड़ों के साथ, जीएसटी संग्रह ₹2 लाख करोड़ के माइलस्टोन के करीब पहुंच गया है। इस शानदार बढ़ोतरी की मुख्य वजह आयात पर जमा जीएसटी रेवेन्यू में भारी वृद्धि थी। हालांकि घरेलू लेन-देन से होने वाले रेवेन्यू में केवल मामूली बढ़ोतरी हुई, लेकिन इंपोर्ट से जुड़े जीएसटी (GST) संग्रह में तेज़ उछाल ने इसकी भरपाई कर दी। घरेलू लेन-देन से GST रेवेन्यू ₹1,34,774 करोड़ रहा, जो पिछले साल जून की तुलना में 6.5% की सालाना बढ़ोतरी दिखाता है।

वहीं, आयातों से जीएसटी (GST) संग्रह 34.6% बढ़कर ₹60,038 करोड़ हो गया, जो GST रेवेन्यू में कुल बढ़ोतरी का सबसे बड़ा योगदानकर्ता रहा। राज्यों में, उत्तर प्रदेश ने सबसे ज़्यादा बढ़ोतरी दर्ज की, जहां जीएसटी (GST) संग्रह 19% बढ़कर ₹7,675 करोड़ से ₹9,165 करोड़ हो गया। उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज करने वाले अन्य राज्यों में असम (17%), पंजाब (14%) और गुजरात (12%) शामिल हैं।

GST रेवेन्यू में भारत का सबसे बड़ा योगदानकर्ता महाराष्ट्र ने 9% की बढ़ोतरी दर्ज की, और संग्रह ₹30,714 करोड़ तक पहुंच गया। कर्नाटक ने 10% की बढ़ोतरी दर्ज की, जबकि दिल्ली में 8% की वृद्धि हुई।

- डेली थांथी, 1 जुलाई, 2026.

भारत का विदेशी कर्ज़ बढ़कर ₹72 लाख करोड़ हुआ: RBI

जैसे-जैसे भारत की अर्थव्यवस्था तेज़ी से बढ़ रही है, रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया (RBI) ने देश के विदेशी कर्ज़ पर अपने ताज़ा आंकड़े जारी किए हैं। RBI के अनुसार, भारत का विदेशी कर्ज़ बढ़कर ₹72.15 लाख करोड़ (लगभग US$762.8 बिलियन) हो गया है। सेंट्रल बैंक ने बताया कि अमेरिकी डॉलर की वैल्यू बढ़ने और उसके मुकाबले भारतीय रुपये का मूल्य घटने से देश के विदेशी कर्ज में बढ़ोतरी हुई है; मार्च 2026 के आखिर में यह कर्ज ₹72.15 लाख करोड़ था।

पिछले साल के मुकाबले भारत का विदेशी कर्ज US$26.3 अरब बढ़ा है। RBI ने यह भी बताया कि यह बढ़ोतरी मुख्य रूप से प्राइवेट सेक्टर के कर्ज की वजह से हुई है, न कि सरकारी कर्ज की वजह से।

इसके अलावा, देश का विदेशी कर्ज और GDP का अनुपात (External Debt-to-GDP Ratio) एक साल पहले के 19.8% से बढ़कर 20.8% हो गया है।

हालांकि भारत का शॉर्ट-टर्म विदेशी कर्ज भी थोड़ा बढ़ा है, लेकिन अर्थशास्त्रियों का मानना है कि देश का मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार कुल कर्ज की स्थिति को नियंत्रण में रखे हुए है।

- दिनाकरन, 1 जून, 2026.

एक पथ-प्रदर्शक का सफ़र !

हमारे सभी युवा विजेताओं को अभिवादन !

इस महीने, हम सैम ऑल्टमैन के बारे में बता रहे हैं, जो दुनिया के जाने-माने एंटरप्रेन्योर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के क्षेत्र में एक अहम हस्ती हैं। उन्होंने AI के भविष्य को आकार देने में बड़ी भूमिका निभाई है, और उनका सफ़र कड़ी मेहनत, स्वयं पर भरोसा, मुश्किलों का सामना करने की हिम्मत और जीवन भर सीखते रहने का एक प्रेरणादायक उदाहरण है।

सैम ऑल्टमैन का जन्म 22 अप्रैल, 1985 को शिकागो, (यू.एस.ए) में हुआ था।

स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने 2005 में कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई के लिए स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया। लेकिन, बिना देरी किए अपने एंटरप्रेन्योर बनने के सपने को पूरा करने की चाहत में, उन्होंने डिग्री पूरी करने से पहले ही कॉलेज छोड़ने का फैसला किया।

कम उम्र से ही सैम एंटरप्रेन्योर बनने के लिए पक्के इरादे वाले थे। सिर्फ़ 19 साल की उम्र में, उन्होंने अपना पहला स्टार्टअप, 'लूप्ट' (Loopt) शुरू किया। कंपनी को उतनी सफलता नहीं मिली जितनी उन्होंने शुरू में सोची थी। लेकिन हार से निराश होने के बजाय, उन्होंने सीखना जारी रखा, नई स्किल्स विकसित कीं और अपने दर्शन को साकार करने के लिए लगातार काम किया।

बाद में, सैम ने दुनिया के सबसे मशहूर स्टार्टअप एक्सेलेरेटर में से एक, 'वाई कॉम्बिनेटर' (Y Combinator) में नेतृत्व की भूमिका संभाली। वहाँ, उन्होंने हज़ारों युवा एंटरप्रेन्योर्स को गाइड किया और उनमें से कई को अपने इनोवेटिव आइडियाज़ को सफल कंपनियों में बदलने में मदद की।

बाद में वे OpenAI के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर (CEO) बने। 2023 में, उन्हें अचानक CEO के पद से हटा दिया गया। कड़ी आलोचना, अनिश्चितता और अपने करियर के सबसे मुश्किल पलों में से एक का सामना करने के बावजूद, सैम शांत और मज़बूत बने रहे। कुछ ही दिनों में, उन्हें फिर से CEO बना दिया गया, जिससे पता चला कि कर्मचारियों, पार्टनर्स और टेक्नोलॉजी की दुनिया के लोगों को उनकी लीडरशिप पर कितना भरोसा था।

उनकी लीडरशिप में, ChatGPT जैसे AI टूल्स ने दुनिया भर में लाखों लोगों की मदद की है। शिक्षा और रिसर्च से लेकर बिज़नेस और रोज़मर्रा की ज़िंदगी तक, उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के व्यावहारिक इस्तेमाल और ग्लोबल असर को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है।

कॉलेज छोड़ने वाले छात्र से लेकर दुनिया के सबसे प्रभावशाली टेक्नोलॉजी लीडर्स में से एक बनने तक, सैम ऑल्टमैन का सफ़र हमें याद दिलाता है कि सफलता सिर्फ़ शैक्षिक योग्यता से तय नहीं होती। लगन, लगातार सीखते रहना और आगे बढ़ते रहने का साहस ही अक्सर सबसे बड़ा फ़र्क पैदा करता है।

प्रिय मित्रों, हम उनके जीवन से क्या सीख सकते हैं?

सफलता कभी भी सिर्फ़ किस्मत से नहीं मिलती। यह कड़ी मेहनत, लगातार कोशिश, सीखने की इच्छा और असफलता से उबरने के पक्के इरादे से मिलती है। इसलिए, अगर ज़िंदगी में कभी असफलता का सामना करना पड़े, तो हिम्मत न हारें। फिर से उठ खड़े हों। सीखते रहें। कड़ी मेहनत करते रहें। आगे बढ़ते रहें।

एक दिन, आप भी ऐसी ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं जो दुनिया को प्रेरित करें।